रजि. न. MPHIN / 2007 / 22179

बरली की दुनिया

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान इन्दौर की मासिक समाचार पत्रिका

"मानव जाति एक पक्षी के समान है, जिसके दो पंख हैं, एक पुरुष दूसरा स्त्री। जब तक दोनों पंख मजबूत न होंगे, एक सांझी शक्ति के द्वारा हिलाए न जाएंगे, तब तक पक्षी की आकाश में उड़ान असम्भव है।"

वर्ष—4 अंक 42 अगस्त 2010 मूल्यः 5रू.

स्वतंत्रता दिवस का महत्व

स्वतंत्रता दिवस भारत का राष्ट्रीय त्योहार है जो कि हर साल 15 अगस्त को मनाया जाता है। भारत दो सौ सालों तक ब्रिटिश साम्राज्य का गुलाम रहा। हमारा देश ब्रिटिश शासन से 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ था। स्व का मतलब है अपना और तंत्र का मतलब है शासन यानि अपना शासन। स्वतंत्रता दिवस को भारत अपने देश का मालिक बना। आज भारत को स्वतंत्र हुए पूरे 63 साल हो गए हैं। स्वतंत्रता दिवस ऐसा दिन है जो हर भारतीय के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह त्योहार किसी विशेष जाति, धर्म या वर्ग के लोगों के लिए नहीं है। सभी धर्मों के लोग मिलकर इस त्योहार को मनाते हैं चाहे हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, बहाई या किसी अन्य धर्म के हों। स्वतंत्रता दिवस सभी के लिए एक जैसा महत्व रखता है। पूरे देश में सभी लोग मिलकर खुशियाँ मनाते हैं। स्कूल, कॉलेज, सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं में झंडावंदन के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। स्वतंत्र भारत अपने विकास की ओर बढ़ता रहे, दुनिया में इसका नाम हो, इसके लिए सभी लगन और मेहनत से काम करने का संकल्प लेते हैं।

प्रशिक्षणार्थी काली चौंगड़, गमती निंगवाल और बिंदा चौहान झंडावंदन करते हुए

भारत का लोकतंत्र

भारत की सरकार को लोकतंत्र कहते हैं जिसका मतलब है लोगों का तन्त्र यानि हमारी सरकार जो कि भारत के लोगों की, लोगों के लिए और लोगों द्वारा बनाई जाती है। लोकतंत्र में हर भारतीय को बहुत सारे अधिकार दिए गए हैं। यह सभी अधिकार एक पुस्तक में लिखे हैं, जिसे संविधान कहते हैं। संविधान के अनुसार भारत में रहने वाले शहर या गाँव के महिला—पुरूष को बराबर अधिकार दिए गए हैं और हर नागरिक अपने अधिकारों के प्रति स्वतंत्र है। अगर किसी के साथ अन्याय हो तो उच्च न्यायालय या सर्वोच्च न्यायालय से न्याय ले सकते हैं। भारत के संविधान में छह मौलिक अधिकार दिए गए हैं। समानता का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार, शोषण के विरूद्ध अधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार, संस्कृति व शिक्षा का अधिकार, संवैधानिक उपचारों का अधिकार। इसके साथ संविधान में भारत के हर नागरिक के लिए कुछ कर्त्तव्य दिए गए हैं यानि अपने देश के लिए जिम्मेदारियाँ दी गई हैं, जिसका पालन सभी को करना चाहिए। चाहे वह किसी भी राज्य में रहता हो, कोई भी भाषा बोलता हो, किसी भी धर्म का पालन करता हो, महिला हो या पुरूष, जवान हो या बूढ़ा सभी के कुछ कर्त्तव्य है जो इस प्रकार है:—

* संविधान का पालन करें उसके आदर्शों, संस्थाओं, तिरंगा झंडा, राष्ट्र गान का आदर करें।
* स्वतन्त्रता के लिए हमारे देश के आंदोलनों को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को दिल में संजोए रखे और उनका पालन करें।
* भारत की एकता और अखंडता की रक्षा करें।
* देश की रक्षा करें और देश की सेवा करें।
* भारत के सभी लोगों में भाईचारा हो जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं को छोड़ दें जो महिलाओं के सम्मान के विरूद्ध हैं।

*हमारी सामाजिक संस्कृति का महत्व समझे और उसकी रक्षा करें।

*जंगल, जमीन, नदी, जानवर इनकी रक्षा करें।

*देश की संपत्ति को सुरक्षित रखें और हिंसा से दूर रहें।

*स्वयं की और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ने का सतत प्रयास करें जिससे देश सतत आगे बढ़ेगा और विकास को पा सकेगा।

स्वतंत्रता आंदोलन में महापुरूषों का योगदान

हम सभी खुश नसीब हैं कि हम स्वतंत्र भारत में रह रहें हैं। स्वतंत्रता दिलाने के लिए देश के हर कोने से हजारों महिलाओं, पुरूषों और बच्चों ने अपने जीवन का बलिदान दिया है और अपना सब कुछ खो दिया। कई लोग जेल गए, बहुत कष्ट उठाए और यहाँ तक कि हँसते–हँसते फाँसी के तख्ते पर चढ़ गए। हम सभी को उनके बारे में पता होना चाहिए जिन्होंने हमें स्वतंत्रता दिलाई। 'बरली की दुनिया' के इस विशेष अंक में भारत के कुछ स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान व त्याग के बारे में जानकारी दी जा रही है।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 जुलाई 1856 को महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में हुआ। प्यार से सब उन्हें 'बाल' कहते थे। वे बचपन से ही बहुत बुद्धिमान थे। पढ़ने लिखने में उनका बहुत मन लगता था और सच बात कहने में कभी नहीं घबराते थे।

स्कूल के दिनों की घटना है। एक दिन कुछ बच्चों ने कक्षा में मूँगफली खाई और छिलके वहीं फेंक दिए। जब शिक्षक कक्षा में आए तब सभी बच्चों को स्केल से मारना शुरू कर दिया। जब तिलक की बारी आई तो उन्होंने कहा, "मैने मूँगफली नहीं खाई है, पर मैं किसी का नाम भी नहीं बताऊँगा।" शिक्षक ने उनके हाथ पर स्केल से मारा। उन्होंने चुपचाप सहन किया, लेकिन चुगली नहीं की।

उनका कहना था कि कोई भी काम करने से पहले शिक्षा का होना बहुत जरूरी है। उन्होंने एक स्कूल खोला और फिर एक कॉलेज भी खोला। फिर भी उन्हें अपने काम से संतोष नहीं मिल रहा था। उस समय पूरे देश में ब्रिटिश शासन था और पूरा देश दुःखी था। वे भारत को स्वतंत्र देखना चाहते थे। ऐसे कठिन समय में तिलक ने सभी के अंदर स्वाभिमान जगाया और स्वतंत्रता का महत्व समझाया।

उनका मूल संदेश था, 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। मै उसे लेकर ही रहूंगा।' इसका मतलब है, स्वतंत्रता पर मेरा अधिकार जन्म से है और इसे मै जरूर लेकर ही रहूंगा।" इस नारे से उन्होंने कई भारतीयों के मन में स्वतंत्रता की ज्योति जगाई। उन्होंने भारतवासियों को जागरूक करने के लिए समाचार पत्र को सबसे अच्छा साधन बनाया। पहले उन्होंने 'केसरी' नाम का मराठी और 'मराठा' नाम से अंग्रेजी साप्ताहिक समाचार पत्र शुरू किया। इन दोनों समाचार पत्रों में देशभक्ति के लेख छापने शुरू किए। इन्हीं समाचार पत्रों में लोगों की शिकायतें भी छपने लगीं। इसके बावजूद भी कोई परिणाम नहीं मिल पा रहा था। फिर वे लोगों से आमने–सामने बैठ कर चर्चा करने लगे। लोग आपस में मिलने जुलने लगे और स्वतंत्रता की बात करने लगे। जब ब्रिटिश साम्राज्य का अत्याचार बढ़ने लगा बाल गंगाधर तिलक ने उनके खिलाफ बहुत सारे लेख लिखें। इसके बाद ब्रिटिश साम्राज्य ने उनके खिलाफ मुकदमा चलाया। उन पर देश से गद्दारी करने का आरोप लगाया। उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। मरते दम तक वे स्वतंत्रता के लिए लड़ते रहें और देशभक्ती की ही बातें करते रहें। उनके चरित्र, स्वाभिमान, हिम्मत, निडरता और देशप्रेम आदि गुणों के कारण लोगों ने उनको अपना मार्गदर्शन माना।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस

सुभाषचंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को उड़ीसा के कटक में हुआ था। उनकी माँ का नाम प्रभावती व पिता का नाम जानकीनाथ बोस था। वे बचपन से ही पढ़ाई में होशियार थे और उनकी समाजकार्य में बहुत रूचि थी। उन्होंने अपने और आसपास के गाँवों में बाढ़ और महामारी के समय बहुत काम किया। देशभक्ति का जोश और भावना उनमें बचपन से ही थी। वे अत्याचार के विरोध में तुरंत खड़े हो जाते थे।

कॉलेज के दिनों की एक घटना है जब उन्होंने अंग्रेज शिक्षक पर हमला कर दिया था क्योंकि वह सभी छात्रों को हमेशा अपमानित करता रहता था। सुभाष की हिम्मत देखकर सभी को बहुत आश्चर्य हुआ। इस कारण उन्हें कॉलेज से निकाल दिया गया। इसका उनके जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ा। दो साल तक वे पढ़ाई से दूर रहें और समाज कार्य करते रहें। उन्होंने फिर से पढ़ाई शुरू की और पढ़ाई पूरी करने के बाद भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में चुने गए। अंग्रेज सरकार की नीतियों के विरोध में दो वर्ष बाद ही उन्होंने सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया। जब वे आई.सी.एस. की परीक्षा पास कर भारत लौटे तो उन्हें एक लिखित परीक्षा भी देनी थी। सवाल देखकर उनका माथा ठनका। उसमें एक वाक्य था जिसे सभी को अपनी भाषा में अनुवाद करना था। उस वाक्य का मतलब था 'भारतीय सैनिक ईमानदार नहीं होते हैं।' नेताजी ने परीक्षा लेने वाले को यह सवाल हटा देने को कहा। उसने कहा कि इस सवाल को हल नहीं करोगे तो तुम्हें नौकरी नहीं मिलेगी। सुभाषचंद्र ने कागज के टुकड़े कर दिए और कहा, "ये धरी तुम्हारी नौकरी। अपने देश के लोगों पर कलंक सहने से भूखे मर जाना मै अच्छा समझता हूँ।"

इसके बाद वे स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हो गए। भारतीय सैनिकों पर हो रहे अत्याचार का विरोध किया और देश के प्रति गद्दारी के मामले में ग्यारह बार जेल गए। एक बार बीमार होने के कारण उन्हें जेल की जगह घर में ही कैद किया। वे पहरेदारों को धोखा देकर जर्मनी चले गए। वे देश से बाहर रहकर भी भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे थे। उन्होंने वहाँ अंग्रेजों के खिलाफ एक मजबूत अंतर्राष्ट्रीय मोर्चा तैयार कर लिया था। नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने भारतवासियों को एक नारा दिया था, 'तुम मुझे खून दो, मै तुम्हें आजादी दूँगा।' उन्होंने देश को स्वतंत्र करवाने के लिए आजाद हिंद फौज का गठन किया था। एक बार नेताजी से किसी ने कहा, "नेताजी आप इस तरह कब तक कुंवारे रहेंगे?शादी क्यों नहीं कर लेते?" नेताजी बोले, "शादी तो मै तब करूं, जब कोई मनाचाहा

दहेज दे।" दूसरे इंसान ने बोला, "कोई भी आपको मनचाहा दहेज दे सकता है।" नेताजी बोले, "लेकिन दहेज में मुझे देश की स्वतंत्रता चाहिए। है कोई देने वाला?" यह सुनकर वह इंसान हैरान रह गया। एक विमान दुर्घटना में 18 अगस्त 1945 को उनकी मृत्यु हो गई लेकिन उनके बलिदान और साहस के लिए उन्हें आज भी लोग याद करते हैं।

चंद्रशेखर आजाद

चंद्रशेखर आजाद का नाम भारत के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों में लिया जाता है। उनका जन्म 23 जुलाई 1906 में झाबुआ जिले के भाबरा गाँव में हुआ था। वे अपने माता–पिता के बहुत लाड़ले थे। उनकी शिक्षा गाँव में ही हुई थी। उनका पढ़ने लिखने में मन नहीं लगता था। उन्हें दूसरे लड़कों के साथ खेलने, तीर–कमान चलाने में ज्यादा मजा आता था। गाँव का जीवन उन्हें पसंद नहीं था। एक बार वे बिना बताए काशी चले गए और एक संस्कृत स्कूल मे दाखिला ले लिया।

वे हमेशा अन्याय के विरोध में अपनी आवाज उठाते थे। एक बार एक अंग्रेज युवक एक भारतीय लड़की को तंग कर रहा था तो उनसे सहन नहीं हुआ और उन्होंने अंग्रेज के गाल पर एक जोरदार तमाचा मारा और खूब पीटा। फिर उस लड़की के पैरों में झुकाकर माफी मंगवाई। उन्होंने जीवनभर अन्याय के खिलाफ संघर्ष किया। सन् 1920 में असहयोग आंदोलन में वे शामिल हुए। उन्हें पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। अदालत में मजिस्ट्रेट ने उनसे उनका नाम पूछा तो उन्होंने कहा, 'आजाद', पिता का नाम पूछा तो कहा, 'स्वतंत्रता' और पता पूछा तो उन्होंने बताया 'जेल'। वे जबाब सुनकर बहुत नाराज हुए। इस पर उन्होंने उनकी पीठ पर 15 कोड़े मारने का हुक्म दिया। हर कोड़े की मार पर उनके मुँह से 'वंदे मातरम' निकलता। खून बुरी तरह से बह रहा था, फिर भी उनके चेहरे पर कोई दर्द नहीं दिख रहा था। उस समय उनकी उम्र सिर्फ 15 साल थी। लोग उनकी साहस और जोश को देखकर हैरान थे। सब लोग उन्हें 'आजाद' कहने लगे। इस तरह उनका नाम चंद्रशेखर आजाद पड़ा।

कानपुर के एक सभा हुई जिसमें भारत के कई जगहों से स्वतंत्रता सेनानियों ने भाग लिया। उस सभा में स्वतंत्रता सेनानियों की एक संगठन बनाई गई थी। इसमें चंद्रशेखर ने भी सदस्यता ली थी। इसमें निर्णय लिया गया कि चंद्रशेखर आजाद पंजाब में संगठन का काम करेंगे। उनकी संगठन की शक्ति इतनी मजबूत थी जिससे ब्रिटिश सरकार भी काँपती थी। उन्होंने देश के लिए अपना सबकुछ त्याग कर दिया था। एक बार एक अंग्रेज पुलिस ऑफिसर की हत्या के आरोप में पुलिस ने उन्हें ढूँढने की बहुत कोशिश की। उन पर दस हजार रूपए का इनाम भी था लेकिन किसी भी तरह से पुलिस उन्हें नहीं ढूँढ पाई। लेकिन उनके एक साथी ने पुलिस को उनकी सूचना दे दी। पुलिस ने उनको घेर लिया। उन्होंने अकेले ही बिना घबराए पुलिस का मुकाबला किया। आखिर में उन्होंने पिस्तौल को अपनी कनपटी पर रखकर गोली चला दी। पुलिस वाले उनसे इतने डरे हुए थे कि उनके मरे हुए शरीर के पास जाने की भी हिम्मत नहीं कर पा रहें थे। उसके बाद उन्होंने उन पर कई गोलियाँ चलाई और तब उनके पास जाने की हिम्मत की।

भगत सिंह

भगत सिंह का जन्म 27 सितंबर 1907 को पंजाब के एक सिक्ख परिवार में हुआ था। वे वीरता के प्रतीक के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में अपना पूरा योगदान दिया। उनके जीवन का लक्ष्य भारत में ब्रिटिश साम्राज्य को खत्म करना था। उनकी पढ़ाई लाहौर के डी. ए. वी. स्कूल में हुई थी लेकिन वे अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाए क्योंकि 12 साल की उम्र में ही उन पर जलियाँवाला हत्याकांड का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा था।

जलियाँवाला बाग में 13 अप्रैल 1919 को ब्रिटिश साम्राज्य के अत्याचार के विरोध में बैसाखी के दिन एक सभा हुई। सभा में एक अंग्रेज अधिकारी जनरल डायर अपने सैनिकों के साथ आए और बाग को चारो तरफ से घेर लिया। उसके बाद गोली चलाने का आदेश दे दिया। वहाँ महिलाएँ, बच्चे और बूढ़े भी थे। गोलीबारी दस मिनट तक चलती रही। कोई भी बाहर नहीं जा सका। कई लोग डर से कुएँ में कूद गए। इस घटना में लगभग 400 लोग मारे गए और 1200 लोग घायल हुए थे। इसके बाद भगत सिंह ने ब्रिटिश साम्राज्य को देश से बाहर निकालने का संकल्प लिया। सन् 1921 में उन्होंने गाँधीजी के साथ असहयोग आंदोलन में भाग लिया। इस आंदोलन का उद्देश्य जलियाँवाला बाग हत्याकांड का विरोध, ब्रिटिश सरकार का विरोध और स्वतंत्रता प्राप्त करना था। भारत के सभी हिन्दु और मुसलमान एक होकर इस आंदोलन में शामिल हुए। अनेक भारतीयों ने सरकारी नौकरियाँ छोड़ दी। विदेशी कपड़े पहनना छोड़ दिया और उन कपड़ों को जला दिया। इसी दौरान उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में चौरी–चौरा नामक स्थान पर लोगों ने पुलिस थाने को आग लगा दी, जिसमें 22 पुलिस जलकर मर गए। इस घटना के बाद भगत सिंह ने ठान लिया कि वे भारत को अहिंसा से नहीं, हिंसा का रास्ता अपना कर स्वतंत्र करवाएंगे।

फिर वे लाहौर के नेशनल कॉलेज में शामिल हो गए जो क्रांतिकारी गतिविधियों का केन्द्र था। पंजाब में क्रांति का संदेश फैलाने के लिए भगत सिंह ने क्रांतिकारियों की एक संगठन बनाई जिसका नाम 'नौजवान भारत सभा' रखा। यह सभा भारत के युवाओं में देशभक्ति की भावना जगा रही थी। सन् 1928 में क्रांतिकारियों की एक बैठक में शामिल होने के लिए वे दिल्ली गए। वहाँ पर वे चंद्रशेखर आजाद से मिले। दोनों का लक्ष्य भारत को स्वतंत्र करवाना था। उन्होंने 'हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ' बनाई। सन् 1927 में साइमन कमीशन का गठन किया गया। इस कमीशन में एक भी भारतीय नहीं था और इस कमीशन से भारत के लोगों को स्वतंत्रता पाने की बिल्कुल भी आशा नहीं थी। इस कमीशन का बहुत विरोध हुआ और जगह–जगह पर प्रदर्शन और हड़ताल हुए। पंजाब में लाला लाजपत राय को अंग्रेजों ने बुरी तरह लाठी से पीटा जिससे बाद में उनकी मृत्यु हो गई। इसके बाद भगत सिंह में अंग्रेजों के प्रति और गुस्सा भर गया। उन्होंने उस ब्रिटिश अधिकारी को जान से मारने का निश्चय

किया जो लाला लाजपत राय के मौत के जिम्मेवार थे। गलती से उन्होंने दूसरे पुलिस अधिकारी को मार डाला। सजा से बचने के लिए वे लाहौर भाग गए। 9 अप्रैल 1929 को सरकार के विरोध में उन्होंने केन्द्रीय विधान सभा में एक बम फेंक दिया। फिर उन पर मुकदमा चलाया गया। 23 मार्च 1931 को ब्रिटिश सरकार ने उन्हें फाँसी की सजा दे दी और वह हँसते हुए फाँसी चढ़ गए। वे मानवता के इतिहास में आज भी जीवित हैं और प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों के रूप में याद किए जाते हैं।

सरदार वल्लभभाई पटेल

सरदार वल्लभभाई पटेल को सभी लौह पुरूष के नाम से जानते हैं। लौह का मतलब है लोहे के समान मजबूत। उनका जन्म 31 अक्टूबर 1857 को गुजरात के नड़ियाद गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम झंवरभाई व माँ का नाम लाड़बाई था। वे बचपन से ही गलत बात का विरोध करते थे। उनकी निडरता और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने के गुणों के कारण उन्हें यह नाम दिया गया था।

जब वे स्कूल में थे तो शिक्षकों ने प्रकाशकों से बहुत सारी किताबें खरीद ली और सभी बच्चों पर स्कूल से ही किताबें खरीदने के लिए दबाब डालने लगे। किसी छात्र ने इसका विरोध नहीं किया लेकिन वल्लभभाई ने बिना डरे कहा, “शिक्षक का काम पढ़ाना है, किताबें बेचना नहीं। मै इसका विरोध करता हूँ।” ऐसा बोलकर वे कक्षा से बाहर चले गए और एक जगह पर खड़े हो गए। धीरे–धीरे सभी छात्र उनके साथ हो गए। इससे उनका हौसला बढ़ा। उनको माता–पिता और दूसरे लोगों का भी समर्थन मिला। स्कूल 5–6 दिनों तक बंद रहा। उसके बाद कोई भी स्कूल से किताबें बेचने की हिम्मत नहीं कर पाया।

पढ़ाई पूरी करके वे बहुत बड़े वकील बनें। एक बार वे एक मुकदमे में व्यस्त थे। तभी उन्हें एक तार मिला। उन्होंने तार को पढ़ा और जेब में रख लिया। मुकदमा के बाद उनके साथियों ने उनसे तार के बारे में पूछा तो बोले, “मेरी पत्नी का निधन हो गया है।” यह सुनकर सभी ने सोचा, यह आदमी है या फौलाद। सभी ने उनके धैर्य का लोहा माना। सन् 1918 में खेड़ा सत्याग्रह में वल्लभभाई की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस सत्याग्रह का मुख्य उद्देश्य किसानों का कर माफ कराना था। यह सत्याग्रह चार महीने चला। उन्होंने किसानों के बीच रहकर उनके दुख–दर्द बाँटे। वे लगातार किसानों की सभा लेते रहते थे। उनके भाषण बहुत प्रभावशाली होते थे। उससे किसानों को बहुत हौसला मिलता था। सन् 1928 में गुजरात के बारडोली में वल्लभभाई पटेल ने फिर एक सत्याग्रह किया। इसमें महिलाएँ भी शामिल हुई थी। सरकार ने कर की दरें बहुत बढ़ा दी थी जो गरीब किसानों के बस की बात नहीं थी। उन्होंने सभी किसानों से कहा कि वे बढ़ी हुई दरें न दें। यह सत्याग्रह छः महीने चला। अंत में सरकार को हार माननी पड़ी। पटेल राष्ट्रीय नेता के रूप में प्रसिद्ध हो गए। लोगों ने उन्हें 'सरदार' की उपाधि से सम्मानित किया। स्वतंत्रता आंदोलन में उन्होंने बहुत योगदान दिया और भारत छोड़ो आंदोलन के समय कई बार जेल गए। सन् 15 अगस्त 1947 को देश स्वतंत्र होने पर जवाहरलाल नेहरू पहले प्रधानमंत्री तथा सरदार वल्लभभाई पटेल उपप्रधानमंत्री बने।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी

महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर को गुजरात के पोरबंदर में हुआ था। उनके पिता का नाम करमचंद गाँधी और माता का नाम पुतलीबाई था। वे बचपन से सच बोलते थे। इसके कारण उन्हें शर्मिन्दा भी होना पड़ता था लेकिन इस गुण को उन्होंने कभी नहीं छोड़ा। पूरा देश उनको राष्ट्रपिता के रूप में जानता है। लोग उन्हें प्यार से बापू भी कहते थे।

उन्होंने इंग्लैंड से वकालत की पढ़ाई की। वापस आने के बाद देश की स्वतंत्रता के आंदोलन में भाग लिया। ब्रिटिश साम्राज्य से भारत की स्वतंत्रता के लिए अहिंसा का रास्ता अपनाया और दूसरों को भी इसे अपनाने को कहा। उनका मानना था कि अहिंसा ही सबसे बड़ा हथियार है। एक बार चम्पारण में अंग्रेज भारतीयों पर अत्याचार कर रहें थे। गाँधीजी वहाँ पहुंचे तो सभी लोगों में उत्साह आ गया। इससे अंग्रजों को गुस्सा आया और एक अंग्रेज ने उन्हें जान से मारने की योजना बनाई। गाँधीजी बिना डरे उसके घर गए। उनकी हिम्मत और साहस को देखकर वह अंग्रेज हैरान हो गया और कुछ करने की हिम्मत नहीं कर सका।

उन्होंने गांवों की स्थिति सुधारने के काम किए। गांधीजी ने चरखे और देशी सामान के उपयोग को बढ़ावा दिया। इसका कारण था कि लोग अपने देश के सामान का उपयोग करेंगे तो देश का आर्थिक विकास होगा और देश आत्मनिर्भर होगा। उन्होंने दो सिद्धांत दिए, सर्वोदय और स्वराज। सर्वोदय यानि सभी का उदय और विकास। उनका मानना था कि जब हर इंसान का विकास होगा तो देश आगे बढ़ सकता है। जब सभी लोग अपनी क्षमताएँ पहचानकर आगे बढ़ेंगे तो गरीबी अपने आप खत्म हो जाएगी। जब सर्वोदय होगा तो एक ऐसा देश बनेगा जहाँ सभी अपने निर्णय स्वयं ले सकेंगे। गाँधीजी ने स्वतंत्र भारत के सपने को पूरा होते देखा। 30 जनवरी 1948 को उनकी गोली मार कर हत्या कर दी ।

महिलाओं का योगदान

भारत के इतिहास में कई ऐसी महिलाएँ रहीं हैं जिन्होंने अपना जीवन देश की स्वतंत्रता के लिए बलिदान कर दिया। उन्होंने देश की रक्षा और सम्मान को बनाए रखने के लिए पूरी निष्ठा और लगन से अपनी जिम्मेदारी निभाई। उनमें से कुछ महिलाओं के बारे में जानकारी दी जा रही है।

सुश्री सुचेता कृपलानी

सुश्री सुचेता कृपलानी एक महान स्वतंत्रता सेनानी थी। उनका जन्म सन् 1908 में अम्बाला में हुआ था। उन्होंने दिल्ली के इंद्रप्रस्थ कॉलेज और स्टीफन कॉलेज में पढ़ाई की थी। उसके बाद बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में पढ़ाना शुरू किया। वह महात्मा गाँधी के काम से बहुत प्रभावित थी। सन् 1946 में कस्तूरबा गाँधी ट्रस्ट में आयोजन सचिव के रूप में काम किया। गाँधी जी के साथ भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया। देश के विभाजन के समय हुए दंगों के समय अत्याचार के शिकार लोगों की बहुत मदद की। उन्हें संविधान सभा का सदस्य चुना गया और 15 अगस्त 1947 को उन्होंने संविधान

सभा के स्वतंत्रता सत्र में राष्ट्रीय गीत गाया। स्वतंत्रता के बाद भी वह समाज के कमजोर वर्ग के लिए काम करती रहीं और भारत के लोगों के लिए कई काम किए। बाद में वह लोकसभा की सदस्य के रूप में चुनी गई और उत्तर प्रदेश की पहली महिला मुख्यमंत्री बनी। बीमार रहने के कारण 1971 में सेवानिवृति ली और सन् 1 दिसंबर 1974 को दिल के दौरे से उनकी मृत्यु हो गई।

श्रीमती कमला नेहरू

कमला नेहरू का जन्म सन् 1899 में हुआ था। वह देश के पहले प्रधान मंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू की पत्नी थी। उनकी शादी 8 फरवरी 1916 में हुई थी।

उन्होंने स्वतंत्रता के आंदोलन में पूरा योगदान दिया। असहयोग आंदोलन के दौरान 1921 में इलाहाबाद में शराब और विदेशी कपड़ों के दुकानों के विरोध में महिलाओं का एक संगठन बनाया और दुकानों के सामने धरना दिए, नारे लगाए, इसके विरोध में कई सभाएँ आयोजित की। जब जवाहर लाल नेहरू को लोगों के सामने देशभक्ति का भाषण देने के जुर्म में गिरफ्तार किया गया तो उनकी जगह कमला नेहरू ने भाषण दिया। वे भी दो बार जेल गईं। सन् 1917 में उन्होंने एक बेटी को जन्म दिया जिसका नाम इंदिरा प्रियदर्शनी था। कमला नेहरू की मृत्यु टी.बी. की बीमारी से स्वीट्जरलैंड में हुई थी। उस समय उनके पति पंडित नेहरू जेल में थे।

श्रीमती इंदिरा गांधी

इंदिरा गांधी का जन्म 19 नवम्बर 1917 में हुआ। इस समय देश में स्वतंत्रता का आंदोलन चल रहा था। उनके पिता श्री जवाहरलाल नेहरू और उनकी माता श्रीमती कमला नेहरू थी। उनके माता–पिता ने उन्हें इस तरह से पाला कि वे दुनिया का मुकाबला हिम्मत से कर सकें और पुरूषों के साथ कदम मिला कर चल सकें।

छोटी उम्र से ही उन्होंने अपने परिवार में स्वतंत्रता आंदोलन का माहौल देखा। उन्हें घर से देशभक्ति के संस्कार मिले। उन्हें स्वतंत्रता के आंदोलन को बहुत नजदीक से देखने का अवसर मिला। उस समय महिलाओं के लिए अस्पताल तक नहीं था। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जिन महिलाओं को चोट या गोली लगती थी, उनको भर्ती तक नहीं किया जाता था। तब उनके घर में अस्पताल के कमरे बनाए गए थे। लेकिन डॉक्टरों को आने से मना किया गया था फिर भी वे रात को आते थे। इंदिरा जी ने बचपन में एक 'वानर सेना' बनाई थी। यह बच्चों की ऐसी टोली थी जिसका काम स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लेने वालों की मदद करना था। उसमें जो लड़कियाँ थी उन्होंने जल्दी से कुछ नर्सिंग का काम सीखने की कोशिश की। वे बहुत छोटी थी फिर भी उन्होंने नर्सिंग का काम किया। उनके पिता पंडित नेहरू जब जेल में थे तो पत्र लिखकर उन्हें देश के इतिहास और सामाजिक जीवन व संस्कृति के बारे में बताते थे।

इंदिराजी ने सन् 1942 में पारसी युवक फिरोज गाँधी से विवाह कर एक साहसी कदम उठाया। परिवार के सदस्यों ने थोड़ा विरोध किया पर इंदिराजी का दृढ़ निश्चय देखकर सभी को झुकना पड़ा और जवाहरलाल जी ने अपनी बहादुर बेटी का पूरा सहयोग दिया। सन् 1956 में इंदिराजी अखिल भारतीय युवा कांग्रेस की अध्यक्षा बनी। इसके बाद सूचना और प्रसारण मंत्री रहीं। सन् 1966 को भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री बनीं। उनका प्रधानमंत्री बनना भारतीय महिलाओं के लिए ही नहीं पूरी विश्व की महिलाओं के लिए एक गौरव की बात थी। वह देश की एकता बनाए रखने के लिए हर मुश्किल का सामना करने को तैयार थीं। इंदिराजी में बहुत हिम्मत तथा आत्मविश्वास था। भारत सरकार ने उनको 1972 में 'भारत रत्न' से सम्मानित किया था। उनके लम्बे शासनकाल में उनकी शक्तियों व अनगिनत सफलताओं का लोहा सारी दुनिया ने माना। सन् 31 अक्टूबर 1984 में उन्हीं के सुरक्षा कर्मीयों ने उन पर गोलियाँ चलाईं और उनकी मृत्यु हो गई। इन महान स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को याद करते हुए हम सभी को स्वतंत्रता की कीमत पहचानना चाहिए।

संस्थान के समाचार

प्रबंधक और निदेशिका को पुरस्कार

सद्भावना एवं विकास केन्द्र, भोपाल ने डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन और श्री जिम्मी मगिलिगन को 2010–11 के प्रमुख सामाजिक कार्यकर्त्ता का 'इनोवेटिव सोशल एजुकेटर्स एलेक्स मेमोरियल' पुरस्कार दिया गया। यह पुरस्कार उन्हें समाज के पिछड़े वर्ग की ग्रामीण एवं आदिवासी महिलाओं के विकास और सशक्तिकरण में योगदान देने के लिए दिया गया। पुरस्कार में स्मृति चिन्ह

डॉ. निशा दुबे श्री एवं श्रीमती मगिलिगन को पुरस्कार देते हुए

और 21,000 रूपए दिए गए। यह पुरस्कार मुख्य अतिथि डॉ. (श्रीमती) निशा दुबे कुलपति, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय द्वारा भोपाल में एक विशेष समारोह में 8 अगस्त को दिया गया। डॉ. दुबे ने कहा, "मै इस दम्पति को 25 सालों से जानती हूँ और व्यक्तिगत रूप से इनका समर्पण देखा है। इस दम्पति को यह पुरस्कार देना मेरे लिए गौरव की बात है जिन्होंने अपना पूरा जीवन गरीब युवा ग्रामीण और आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण में लगा दिया है।" यह पहला पुरस्कार है जो इस दम्पति को एक साथ दिया गया है। उन्होंने पुरस्कार में मिली राशी बरली संस्थान को दान में दे दी है।

बरली संस्थान में स्वतंत्रता दिवस

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान में 15 अगस्त 2010 को स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। संस्थान की प्रशिक्षणार्थी जिला आलीराजपुर की बिन्दा चौहान, काली चौंगड़ व गमती निंगवाल ने झंडा फहराया। ये तीनों प्रशिक्षणार्थी विकलांग हैं। उनको यह विशेष सम्मान देना उनका मनोबल बढ़ाकर सशक्त करने की दिशा में एक प्रयास था। इस अवसर पर निदेशिका डॉ. जनक पलटा मगिलिगन ने स्वतंत्रता दिवस के 63वीं वर्षगांठ की बधाई दी। उन्होने स्वतंत्रता सेनानियों, भगत सिंह, लाला लाजपत राय, सरदार पटेल और कई भारतीयों को याद किया जिन्होंने अपना जीवन देश को ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र करवाने में कुर्बान कर दिया। उन्होंने कहा, "राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने स्वतंत्रता के लिए शांति से अहिंसा का आंदोलन चलाया और पूरी दुनिया को इसका संदेश दिया। अब समय आ गया है कि हम सभी देश मिलकर गरीबी, अन्याय, असमानता और भ्रष्टाचार को खत्म करें। शिक्षा के द्वारा महिलाओं को सशक्त करें ताकि वे अपने बच्चों को नैतिक मूल्य सिखा सकें। भारत का अपना संविधान है और उसमें सभी के लिए मौलिक अधिकार, नियम, कानून और कर्त्तव्य दिए गए हैं जिसका पालन करना हर भारतीय को करना चाहिए। बरली संस्थान बहाई सिद्धान्तों से प्रेरित है और बहाई शिक्षाओं के अनुसार हम सब को अपने देश के कानून के प्रति वफादार होना चाहिए और सरकार के बनाए गए नियमों का पालन करना चाहिए। अगर हम देश के कानून के प्रति वफादार नहीं हैं तो ईश्वर के प्रति भी वफादार नहीं हो सकते हैं।"

मुख्य अतिथि फादर जी. ओ. जॉर्ज ने कहा "भारत माता का अंश हम सभी में है। पर्वत, नदियाँ, समंदर, पेड़–पौधे, हम सब उसमें शामिल हैं और हम सब को मिलकर भारत माता को आगे बढ़ाना है। जिस तरह एक रॉकेट ऊँचाई की ओर जाता है उसी प्रकार बरली संस्थान आप प्रशिक्षणार्थियों को ऐसी ऊर्जा दे रहा है जिससे आप रॉकेट की तरह ऊँचाई पर जा सकते हैं। आप सब की आँखों में चमक और

आत्मविश्वास देखकर बहुत अच्छा लग रहा है।"

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही प्रोफेसर बी. वाई. ललीताम्बा ने कहा "स्वतंत्रता दिवस ऐसा त्योहार है जो किसी विशेष जाति या धर्म के लोग नहीं सब लोग मिलकर मनाते हैं। हमारे देश में अनेकता में एकता है और गाँधी जी ने हमें एक साथ

मिलकर रहना सिखाया है। जब हम सब मिलकर रहेंगे तो हमारा देश भी आगे बढ़ेगा।" झंडा फहराने के बाद जिला खरगोन की ममता सोलंकी, सावित्री जाधव, अनिता चौहान, किरण व लक्ष्मी, जिला आलीराजपुर की रंगीता व गुड्डी नरगांवा और इंदौर की तारा परमार ने हिन्दी, निमाड़ी और भिलाली में देशभक्ति गीत गाएं। उत्तर प्रदेश की ऋतिका परमानंद ने कहा, "तिरंगा झंडा हमारे देश की आन, बान और शान का प्रतीक है। हमें इसका सम्मान करना चाहिए। ये हमें एकता, शांति, विश्वास और भाईचारा सिखाते हैं।"

स्वास्थ्य प्रशिक्षिका प्रशिक्षण

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान में रजत जयंती कार्यक्रम के अन्तर्गत तीन दिवसीय 16 से 18 अगस्त सामुदायिक स्वास्थ्य प्रशिक्षिका प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला अमेरिका स्थित संस्था केयरिंग हैंड फॉर चिल्ड्रेन के सौजन्य से की गई। इसमें मध्यप्रदेश के जिला ग्वालियर से 7 ग्रामीण और आदिवासी महिलाओं ने स्वास्थ्य की परिभाषा, जलने से होने वाली दुर्घटनाओं का बचाव और इलाज, दूषित पानी से होने वाली बीमारियों के बचाव और इलाज, एच.आई.वी./एड्स के कारण, बचाव व इलाज, परिवार नियोजन, प्राथमिक चिकित्सा, मातृ व शिशु स्वास्थ्य, स्वास्थ्य और साफ–सफाई, स्वस्थ व संतुलित पोषक आहार, समुदाय की सेवा और लिंग समानता आदि विषयों के बारे में सीखा।

रक्षाबंधन पर वृक्षारोपण

बरली संस्थान में पिछले 25 सालों से हर साल रक्षाबंधन पर वृक्षारोपण किया जाता है। संस्थान की निदेशिका अपने भाईयों से पेड़ के रोप उपहार स्वीकार करती है। उनका मानना है रक्षाबंधन का मतलब है रक्षा करना और जब रक्षा करने की जरूरत पड़ती है तो भाई हर वक्त साथ नही होंगे लेकिन पेड़ जहाँ पर भी लगाएंगे वे हमेशा दूसरों की रक्षा करेंगे। इंदौर के व्यापारी श्री राजेन्द्र ओचानी और उनकी पत्नी हर साल उनके लिए पेड़ का उपहार लाते है और वे अपने भाई और भाभी के साथ मिलकर पेड़ लगाती आई है। वरिष्ठ समाजसेवी श्री किशन मल्होत्रा और उनकी पत्नी भी हर साल पेड़ लगाते है। इसी तरह इस साल भी 24 अगस्त को संस्थान में रक्षाबंधन मनाया गया। इस मौके पर मौसंबी, आंवला और जामुन के रोप लगाए गए।

स्वयंसेवा के अनुभव

●इंग्लैंड के श्री डेविड कर्टिस ने अपनी पत्नी श्रीमती सोफी कर्टिज के साथ संस्थान में 3 अगस्त से 27 अगस्त तक सेवा दी। सोफी ने प्रशिक्षणार्थयों को अंगेजी सिखाई और कार्यालय के अन्य कामों में सहयोग दिया। डेविड ने कहा, "मुझे संस्थान में सेवा देने का अवसर देने के लिए बहुत धन्यवाद। हमें और ज्यादा समय रहने की इच्छा थी। यहाँ पर रहना बहुत ही अच्छा अनुभव है। मुझे विश्वास है हम यहाँ वापस जरूर आएंगे। आप सभी को बरली में सेवा देने के लिए बहुत शुभकामनाएँ।"

हाइदी, सोफी और डेविड

·अमेरिका से आई हाइदी विले ने 5 अगस्त से 22 अगस्त तक संस्थान में सेवा दी। अपने सेवा के अनुभव में कहा, "बरली में रहकर बहुत कुछ सीखने का मौका मिला। आप सभी मेरे हृदय और प्रार्थनाओं में हमेशा रहेंगे।"

संस्थान में आए देश–विदेश के मेहमान

●इंदौर स्कूल ऑफ सोशल वर्क से 112 छात्रों का समूह 4 अगस्त को संस्थान देखने आया। उन सभी को फोटो दिखाकर संस्थान में होने वाली गतिविधियों की जानकारी दी गई। सारी गतिविधियों को जानने के बाद उन्होंने संस्थान से संबंधित कई प्रश्न पूछे। उन सभी ने प्रशिक्षणार्थियों और स्टाफ से बात की। उनके साथ आई हुई प्रशिक्षिका सुश्री मीनाक्षी कर ने कहा, "मै जनक मैडम और जिम्मी सर को संस्थान को एक आदर्श के रूप में विकसित करने के लिए बधाई देती हूँ। मेरी तरफ से संस्थान के भविष्य के लिए बहुत–बहुत शुभकामनाएँ।"

●दुनिया के कई देशों कनाडा, कोलम्बिया, अमेरिका और जर्मनी के इंटरनेशनल स्कूल से 13 अगस्त को छात्रों का एक समूह संस्थान देखने आया। वे सभी संस्थान द्वारा किए जा रहे काम से बहुत प्रभावित हुए। कुछ छात्रों ने अपना अनुभव बताते हुए कहा, "महिलाओं के लिए किया जाने वाला यह काम सचमुच प्रशंसनीय है जो देश के विकास में सहायता देता है।"

●कोचीन की वरिष्ठ पत्रकार लीला मेनन ने 29 अगस्त को कहा, "बहुत ही बढ़िया अनुभव रहा। डॉ. जनक मगिलिगन और श्री जिम्मी मगिलिगन दुनिया को बदल रहें हैं। वे महिला सशक्तिकरण को नया अर्थ और नई दिशा दे रहें हैं। उनके योगदान इस महान देश को और महान बना रहें हैं। मालिनी मेनन ने कहा, "जनक जी और जिम्मी जी से मिलना मेरे इंदौर की यात्रा को समृद्ध और पूर्ण बना दिया। सशक्तिकरण का ऐसा बढ़िया काम पहले कभी नहीं देखा। यह मुझे पूरा जीवन भर याद रहेगा। मै दिल से आपके संपर्क में बनी रहूँगी।"

●पंजाब के तकनीकी शिक्षा विभाग और औद्योगिक प्रशिक्षण विभाग के मंत्री चौधरी स्वर्ण राम 12 अगस्त को संस्थान आए। उन्होंने कहा, "मै बरली संस्थान द्वारा किए जा रहे प्रयासों और गतिविधियों की सराहना करता हूँ। श्रीमती जनक तथा उनके पति बहुत ही अच्छा और महान काम कर रहें हैं और पिछड़ी हुई लड़कियों को शिक्षित कर समाज की सेवा कर रहें हैं। मै उनकी अच्छे भविष्य की कामना करता हूँ।" उनके साथ पंजाब राज्य तकनीकी शिक्षा बोर्ड के नियंत्रक श्री मनदीप सिंह

पंजाब के मंत्री चौधरी स्वर्ण राम के साथ संस्थान के स्टाफ

ढिल्लो भी थे। उन्होंने कहा, "बहुत ही अनूठा अनुभव हुआ और उससे भी बढ़कर दो महान व्यक्तित्व से मिला। आप दोनों के लिए मेरी दिल से शुभकामनाएँ हैं। आप दोनों मानवता के लिए बहुत महान काम कर रहें हैं।"

●बिहार के 'समुदाय' संस्था तथा विनोबा जी के भूदान आंदोलन के प्रमुख श्री के. सुखोमूर्ति अपनी पत्नी के साथ 16 अगस्त को संस्थान आए। उन्होंने कहा, "संस्थान लोगों के लिए सच्ची आशा का निर्माण कर रहा हैं। सोलर ऊर्जा का उपयोग विशेष रूप से अच्छा लगा।"

छत्तीसगढ़ विस्तार केन्द्र के समाचार

दीक्षांत समारोह

बरली ग्रामीण महिला विस्तार केन्द्र ग्राम बारदेवरी जिला–कांकेर में 15 अगस्त 2010 को दीक्षांत समारोह संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि व गांव के सरपंच श्रीमती कनेश्वरी गुणा ने बताया "मेरी गांव की महिलाओं को बरली विस्तार केन्द्र में प्रशिक्षण के दौरान जो जानकारी दी गई है वह हर एक महिला के लिए बहुत जरूरी है। इसलिए मै बरली संस्थान की आभारी हूँ। साथ ही साथ मेरी गांव की प्रशिक्षित बहनों से मेरा यह आवेदन है कि वे इस शिक्षा के जरिए खुद को आगे बढ़ाएं और अपने आपको कमजोर न समझे।" उन्होंने सभी गरीबी सीमा के नीचे की महिलाओं को पंचायत की तरफ से सरकारी योजना द्वारा सिलाई मशीन देने का वादा किया। गांव के उपसरपंच श्रीमान फिंगेश धनेलिया ने कहा "आज से तीन महीने पहले

इस प्रशिक्षण के शुभारंभ के दिन में जिन प्रशिक्षणार्थी बहनों को देखा था और आज जिन बहनों को देख रही हूँ मुझे

विश्वास नहीं हो रहा है कि ये वे वही बहनें हैं। आज ये जिस तरह अपनी भावनाओं को व्यक्त कर रही है यह प्रशिक्षण का ही जादुई असर है। मै बस यही कहना चाहता हूँ कि इरादे मजबूत करो और रास्ते में निकल पड़ो। मुसीबतों में मत रूकना, निंदा से मत डरना, सफलता एक दिन जरूर आपके कदम चूमेगी।" केन्द्र प्रभारी श्रीमती मन्ना शर्मा ने कहा "हम एक मोमबती है जो शिक्षा की चिंगारी से अभी–अभी जले है। अब हमारा कर्तव्य यह बनता है कि हमारे आस पड़ोस मे जो मोमबती बुझी हुई हैं उसको जलाना और अपने समुदाय को प्रकाशित करना। जिसका लाभ हमें भी मिलेगा व इससे समुदाय का विकास भी होगा। हमारे अन्दर ईश्वर ने जो क्षमता दी है। शिक्षा के द्वारा हमने उसको उजागर कर लिया हैं। इस शिक्षा को हमें दूसरों के हित मे लगाना चाहिए नही तो हम वो पेड़ बन जाएंगें जिन्हें लोग काटकर जला देते हैं।" केन्द्र के सह प्रशिक्षिका कु: महेश्वरी नाग ने कहा "प्रशिक्षण देते हुए हमें कोई कठिनाई नही हुई। गाँव की पंचायत ने हमको बहुत सहयोग दिया है। प्रशिक्षणार्थियों में भी सीखने का काफी उत्साह था। सीखने में सारी प्रशिक्षणार्थियों ने बहुत मेहनत की है। हमने भी एक साल पहले ऐसे ही गढ़पिछवाड़ी गाँव में प्रशिक्षण लिया था। अभी हम दूसरो को सिखाने के साथ खुद भी और अच्छी तरह सीख रहे है। आप लोग से यह उम्मीद है कि आप आपका ज्ञान दूसरों से बाँटें।" अंत में छत्तीसगढ़ी गानें पर सबने मिलकर लोकनृत्य भी किया।

प्रिंटेड मैटर–बुक पोस्ट

पता

____

____

____

____

दो विस्तार केन्द्रों का शुभारंभ

ग्राम कन्हारपुरी जिला–कांकेर में 20 अगस्त 2010 को 'बरली ग्रामीण महिला विस्तार केन्द्र' के विस्तार केन्द्र का शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम में 45 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ग्राम कन्हारपुरी के सरपंच श्री दुश्यन्त देहारी द्वारा दीप प्रज्जवलित किया गया। उन्होंने कहा "बरली ग्रामीण महिला विस्तार केन्द द्वारा जो प्रशिक्षण दिया जाएगा, हमारे गाँव की महिलाओं के लिए बहुत ही खुशी की बात है। आज महिलाओं के लिए प्रशिक्षण तथा सशक्तिकरण बहुत जरूरी है। इससे हमारे गाँव की महिलाओं को आगे बढ़ने का मौका मिला है। मै उम्मीद करता हूँ कि वे इस प्रशिक्षण का पूरा लाभ उठाऐंगे। हमारी पंचायत की तरफ से इस प्रशिक्षण को सफल बनाने में हमारा पूरा सहयोग रहेगा।" कार्यक्रम के अध्यक्ष गाँव के उपसरपंच श्रीमान रजक राऊत ने कहा, "हमारे लिए यह बहुत खुशी कि बात है कि हमें आगे बढ़ने का ऐसा सुनहरा अवसर मिला है, तो हमें तन मन से सीखना चाहिए और इस प्रशिक्षण को सफल बनाना चाहिए।"

ग्राम माकड़ी में भी 21 अगस्त 2010 को विस्तार केन्द्र का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम में 40 प्रतिभागियों नें भाग लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ग्राम माकड़ी के उपसरपंच श्री प्रभुलाल धनेलिया नें महिलाओं को प्रोत्साहित करते हुए कहा "बरली संस्थान इंदौर ने हमारी गांव की महिलाओं के विकास के लिए जो कदम उठाए हैं यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। पंचायत व सरकार आपकी छोटी सी कई आर्थिक मदद कर सकते हैं लेकिन कोई सीख नही दे सकते हैं। आज आपको सीखने का जो भी मौका मिला है यह शायद ही तुम्हें आगे मिलेगा। सबसे उम्मीद है कि आप लोग जैसे भी हो समय निकाल कर इस प्रशिक्षण को पूरा करें। हम संस्थान के प्रति बहुत ही आभारी है कि वे हमारे गाँव में इस तरह का प्रशिक्षण देने के लिए आए है। हम प्रशिक्षण में पूरा सहयोग करेंगे।"

बरली की दुनिया ऑनलाईन भी है। इसके पहले वाले अंक www.barli.org के our publications में देख सकते हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोगी
सुश्री विजयश्री व श्री जिम्मी मगिलिगन

हमें पत्र लिखें

"बरली की दुनिया" के पाठकों से विनम्र निवेदन है कि आप हमें नीचे लिखे पते पर पत्र लिखें कि आपको नियमित "बरली की दुनिया" मिल रही है या नहीं।

संपादक "बरली की दुनिया"
बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान
180 भमोरी, न्यू देवास रोड, इंदौर 452010 (म.प्र.)

रजि. न. MPHIN / 2007 / 22179

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की ओर से बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान, 180 भमोरी, न्यू देवास रोड़, इन्दौर – 452010 द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित
मुद्रण स्थल : राजा ऑफसेट, 863/9,नेहरूनगर, इन्दौर द्वारा मुद्रित **संपादक : डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन**